अध्याय 26

इसहाक का फिलिस्तियों में निवास

अध्याय 26 घटनाओं की पुनःआवृति प्रस्तुत करता है, केवल इस बार घटनाएं इसहाक के साथ घटीं न कि उसके पिता अब्राहम के साथ। एक अन्य अकाल और धोखे के अतिरिक्त, लेख परमेश्वर की महान प्रतिज्ञाओं के दोहराए जाने को भी प्रस्तुत करता है।

आलोचना करने वाले शास्त्रियों ने तर्क दिया है कि इस अध्याय की इसहाक से संबंधित कहानियाँ अब्राहम की कहानियों के साथ भ्रांति के कारण हैं। इस मत के अनुसार, अनेकों व्यक्तियों ने भिन्न स्त्रोतों से कहानियों को पहुँचाया, जिस कारण गलती से इसहाक का नाम अपने पिता के स्थान पर आ गया। इस बात को लेकर बाद में किसी लिपिक को लगा होगा कि ये दोनों भिन्न घटनाएं थी जो पिता और पुत्र के साथ फिलिस्ती राजा अबिमेलेक को लेकर घटीं। इसलिए, उत्पत्ति का लेखक उलझन में था, और चाहे उस घटना के पीछे कोई वास्तविक इतिहास रहा भी हो, वह केवल एक बार अब्राहम के साथ इसहाक के जन्म से पहले ही घटित हुआ।

यद्यपि विवरणों मे समानता है,[1] अनेकों कारणों के द्वारा, प्रमाण संकेत करते हैं कि यह पृथक घटनाएं थीं। (1) प्राचीन कनान में अकाल अकसर आते रहते थे, इसलिए ऐसा कोई वैध कारण नहीं है जिससे यह मान लिया जाए कि दो पीढ़ियों के अन्तराल में दो पृथक अकाल नहीं आए होंगे (12:10; 26:1)। (2) अकाल के कारण, अब्राहम को कनान का दक्षिणी भाग, जहाँ वह रहता था, छोड़कर मिस्र जाना पड़ा (12:10)। इस अध्याय में, जिस अकाल के कारण इसहाक गरार को गया उसे स्पष्ट रूप से अब्राहम के समय के अकाल से फ़र्क बताया गया है (26:1)। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने विशेष तौर से इसहाक को मिस्र ना जाने के लिए (26:2)। (3) इसहाक के लिए यह स्वाभाविक था कि वह नेगेव को छोड़कर उत्तर की ओर भूमध्य सागर के निकट के इलाके में जाए जहाँ अकाल नहीं था (26:1)। उसके पिता अब्राहम ने भी गरार में डेरा डाला था यद्यपि ऐसा करने का कारण दिया नहीं गया है (20:1)। (4) अबिमेलेक ने अब्राहम की पत्नी सारा को अपने हरम में ले लिया था (20:2), जबकि इस अध्याय में राजा केवल इस बात से चिंतित था कि कहीं उसके आदमियों में से कोई इसहाक की पत्नी रिबका के साथ कुकर्म ना कर ले (26:10)। (5) जब अब्राहम ने अबिमेलेक से झूठ बोला, परमेश्वर ने राजा से कहा कि सारा

विवाहिता स्त्री है (20:3); उसने अबिमेलेक की पत्नी और उसके हरम की सभी स्त्रियों की कोखों को बन्द कर दिया है (20:17, 18)। एक बिलकुल भिन्न घटना ने गरार के राजा को इसहाक के कपट के प्रति सचेत किया: जब उसने रिबका को अपने पति के साथ क्रीड़ा करते देखा (26:8)।

इसमें अचंभे की कोई बात नहीं होनी चाहिए कि अब्राहम और इसहाक के साथ समान घटनाएं घटीं। उनके कपट के संबंध में, इतिहास और अनुभव हमें सिखाते हैं कि सन्तान बहुदा अपने अभिभावकों की गलतियों को दोहराती है। फिर भी, इस प्रकरण में, यह अनिश्चित है कि अपने अभिभावकों द्वारा गरार में फिलिस्ती राजा के साथ किए गए कपट (20:5), के विषय इसहाक जानकारी रखता था, एक ऐसी घटना जो उसके जन्म के पहले घटी थी (21:1-3)।

गरार में इसहाक (26:1-22)

इसहाक से परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं (26:1-5)

[1]और उस देश में अकाल पड़ा, वह उस पहिले अकाल से अलग था जो इब्राहीम के दिनों में पड़ा था। इसलिए इसहाक गरार को पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के पास गया। [2]वहां यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, "मिस्र में मत जा; जो देश मैं तुझे बताऊं उसी में रह। [3]तू इसी देश में रह, और मैं तेरे संग रहूंगा, और तुझे आशीष दूंगा; और ये सब देश मैं तुझ को, और तेरे वंश को दूंगा; और जो शपथ मैं ने तेरे पिता अब्राहम से खाई थी, उसे मैं पूरी करूंगा। [4]मैं तेरे वंश को आकाश के तारागण के समान करूंगा। और मैं तेरे वंश को ये सब देश दूंगा, और पृथ्वी की सारी जातियां तेरे वंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी। [5]क्योंकि अब्राहम ने मेरी मानी, और जो मैं ने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं विधियों, और व्यवस्था का पालन किया।"

आयत 1. उत्पत्ति का लेखक इस खण्ड का आरंभ यह बता कर करता है कि कनान **देश** में एक **अकाल** पड़ा। यह अकाल **अब्राहम के दिनों में** आए अकाल (12:10) के समान ही था। इस विषम स्थिति के प्रत्युत्तर में, **इसहाक गरार को गया**, जो वह स्थान था जहाँ कभी उसके पिता ने डेरा किया था (20:1)। वह नगर **पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक** के नियंत्रण में था। "अबिमेलेक" का अर्थ है "मेरे पिता राजा है," और संभवतः यह गरार के शासकों के राज-सिंहासन पर बैठने पर दिया जाने वाला नाम था।[2] पैंसठ या पचहत्तर वर्ष पहले, उस शहर का राजा भी यही नाम प्रयोग कर रहा था (20:2)। वह उसका, जिस शासक से इसहाक का सामना हुआ था, संभवतः दादा या पिता था। नाम "अबिमेलेक" की तुलना शब्द "फ़िरौन" से की जा सकती है, जिसका अर्थ होता है "महान घर," और जो पुराने नियम में मिस्र के राजाओं की उपाधि थी।

समालोचकों की दृष्टि में "फिलिस्तीनियों के राजा" वाक्यांश का प्रयोग अनैतिहासिक और कालदोष युक्त शब्दावली है। वे ध्यान दिलाते हैं कि वास्तविक

फिलिस्ती कनान में तेरहवीं और बारहवीं शताबदी बी.सी. तक बहुत अधिक संख्या में नहीं आए थे। इसके अतिरिक्त, फिलिस्तियों पर राजा शासन नहीं करते थे; पाँच शहरों (पाँच शहरों के संगठन): गत, अज्जा, अशकलोन, अशदोद, और एक्रोन (यहोशू 13:3; न्यायियों 3:3; 1 शमूएल 6:16-18), पर उनके "सरदार" थे। ये दृष्टिकोण सही तो है, किंतु बुनियादी रूप से असंगत है। पहला, ये इस का कोई प्रमाण नहीं हैं कि वास्तविक फिलिस्तियों के आने से सैकड़ों वर्ष पहले कनान में कोई फिलिस्ती था ही नहीं (देखें 21:32 की टिप्पणी)। दूसरा, यह बहुत हद तक संभव है कि कुलपतियों के काल के फिलिस्तियों के गरार में राजा होता था, जबकि बाद में कनान में आने वाले हमलावरों ने शासन का भिन्न स्वरूप विकसित किया जिसके अन्तर्गत पाँच शहरों पर "सरदार" थे। लेकिन फिर भी, शब्द "राजा" उन में से किसी एक के वर्णन के लिए भी प्रयोग हो सकता है (1 शमूएल 21:10)।

आयत 2. यहोवा ने इसहाक को ईश साक्षात्कार में **दर्शन दिया**, जैसा दर्शन उन्होंने अब्राहम को दिया था (12:7; 17:1; 18:1)। उन्होंने कहा, **"मिस्र में मत जा।"** अकाल के कारण, संभव है कि इसहाक ने अकाल से बचने के लिए पहले मिस्र जाने के बारे सोचा हो जैसा कि उसके पिता ने किया था (12:10)। यद्यपि उसके विचार यहाँ प्रगट नहीं किए गए हैं, परमेश्वर ने ऐसी हर संभावना को पूर्वानुमान से ही रद्द कर दिया। इसके बजाए, यहोवा ने इसहाक से **उसी** [कनान] **में रहने** को कहा क्योंकि उसने प्रतिज्ञा की थी कि इस देश को अब्राहम और उसके वंश को मीरास के रूप में दे दूंगा।

आयत 3. परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से पलिश्ती शहर गरार को प्रतिज्ञा के देश का अंग बनाया, क्योंकि उसने इसहाक से **इसी देश में रहने** को कहा। इस शब्द "में रह" (גּוּר, *गुर)* का अर्थ था कि इसहाक को "अजनबी या परदेशी" के समान उस देश में रहना था, जैसा की उसके पिता ने किया था (20:1)। उसे उस स्थान में पूर्ण नागरिक के रूप में जगह नहीं मिल सकती थी।

परमेश्वर ने उन्हीं प्रतिज्ञाओं को पुनः दोहराया जो उसने अब्राहम से की थी। उसने कहा **"तू इसी देश में रह, और मैं तेरे संग रहूंगा, और तुझे आशीष दूंगा; और ये सब देश मैं तुझ को, और तेरे वंश को दूंगा; और जो शपथ मैं ने तेरे पिता अब्राहम से खाई थी, उसे मैं पूरी करूंगा"** (देखें 12:1-3; 13:15-17; 15:7, 8, 18-21; 17:2-8; 22:17, 18)।

आयत 4. यहोवा ने इसहाक को यह आश्वासन दिया कि, वह **उसके वंश** को **आकाश के तारागण** के समान **बढ़ाएगा** (देखें 15:5; 22:17), आस पास की सारी भूमि जो दूसरों ने अपने अधिकार में रखी थी वह उन्हें वह भी दे देगा। आगे उसने कहा, **"और पृथ्वी की सारी जातियां तेरे वंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी"** (देखें 12:3; 22:18)। इसहाक मर गया, वैसे ही जैसे उसका पिता अब्राहम भी मर गया था बिना उन प्रतिज्ञाओं को पूरा होता देख; परंतु उसके वंशज वह वाहक होंगे जिनके द्वारा सभी जातियां "आशीष पाएंगी।"

आयत 5. इस आयत की भाषा मोरिय्याह पर्वत में घटी घटना का स्मरण

दिलाती है, जहाँ अब्राहम ने एक वेदी बनाई थी और अपने पुत्र को बलिदान करने वाला था। परमेश्वर के एक दूत ने उसे ऐसा करने से रोका और उसकी आज्ञाकारिता के लिए उसे आशीष दी। जो आशीष अब्राहम को दी गयी थी, वही यहाँ भी देखने को मिलती है (26:3-5), जिसमें लिखा है "क्योंकि तूने मेरी बात मानी है" (22:18)। इस बात में कोई शंका नहीं कि इसहाक ने जो उस समय जवान था, दूत को ऐसा बोलते हुए सुना था।

परमेश्वर ने 22:18 में कहीं हुई स्वर्गदूत की बातों में और इज़ाफा किया। उसने इसहाक से की हुई प्रतिज्ञाओं के पीछे के कारण को भी स्पष्ट किया, उसने कहा **"क्योंकि अब्राहम ने मेरी मानी, और जो मैं ने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं, विधियों, और व्यवस्था का पालन किया।"**[3] दूसरे शब्दों में परमेश्वर इसहाक (दूसरी पीढ़ी) को आशीषित कर रहा था उसके पिता (प्रथम पीढ़ी) के विश्वास और आज्ञाकारिता के कारण, और अब्राहम की धार्मिकता के कारण वह उसकी संतानों को भी (तीसरी पीढ़ी) लगातार आशीषें देता रहेगा। इसहाक ने आत्मिकता की विरासत अपने पिता से प्राप्त की थी, और यह उसकी ज़िम्मेदारी थी कि वह आने वाली पीढ़ी को ये विरासत सौंपे। इस समय तक वह नहीं जानता था कि प्रतिज्ञाओं का पूरा होना एसाव और उसके परिवार की बजाय याकूब और उसके वंशजों के द्वारा होगा।

अपनी पत्नी से जुड़ा इसहाक का झूठ (26:6-11)

[6]सो इसहाक गरार में रह गया। [7]जब उस स्थान के लोगों ने उसकी पत्नी के विषय में पूछा, तब उसने यह सोच कर कि यदि मैं उसको अपनी पत्नी कहूं, तो यहां के लोग रिबका के कारण जो परम सुन्दरी है मुझ को मार डालेंगे, उत्तर दिया, वह तो मेरी बहिन है। [8]जब उसको वहां रहते बहुत दिन बीत गए, तब एक दिन पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की में से झांक के क्या देखा, कि इसहाक अपनी पत्नी रिबका के साथ क्रीड़ा कर रहा है। [9]तब अबीमेलेक ने इसहाक को बुलवा कर कहा, वह तो निश्चय तेरी पत्नी है; फिर तू ने क्योंकर उसको अपनी बहिन कहा? इसहाक ने उत्तर दिया, मैं ने सोचा था, कि ऐसा न हो कि उसके कारण मेरी मृत्यु हो। [10]अबीमेलेक ने कहा, तू ने हम से यह क्या किया? ऐसे तो प्रजा में से कोई तेरी पत्नी के साथ सहज से कुकर्म कर सकता, और तू हम को पाप में फंसाता। [11]और अबीमेलेक ने अपनी सारी प्रजा को आज्ञा दी, कि जो कोई उस पुरुष को वा उस स्त्री को छूएगा, सो निश्चय मार डाला जाएगा।"

आयत 6. अकाल के कारण **इसहाक गरार में ही रहा**। "रहा" शब्द इब्रानी क्रिया יָשַׁב *(याशाब)* से निकला है, जिसका अर्थ है "रहना या वास करना।" यह अकसर अति व्यापी ढंग से "गुर," क्रिया के साथ इस्तेमाल किया जाता है, जो पलिश्ती देश के गरार शहर में कुलपति के दर्जे को एक परदेशी या अप्रवासी (26:3; देखें 20:1; 37:1; 47:4; रूत 1:1) के रूप में पहचानता है।

आयत 7. जैसा उसके पिता अब्राहम ने उससे पहले किया था (12:11, 12; 20:11), वैसे ही इसहाक को भी यही डर था की **रिबका** की **सुन्दरता** के कारण उसे मर डाला जायेगा। वह तो शायद भूल गया था या परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर उसका विश्वास कमज़ोर था जिसमें उसने इस देश में उसके साथ बने रहने का वादा किया था (26:3)। इसलिए **जब वहाँ के लोगों ने उसकी पत्नी के विषय में पूछा** तब इसहाक **डर गया** और विदेशी लोगों को यह कह कर झूठ बोला कि **वह मेरी बहन है** (देखें 12:13, 19; 20:2, 5)।

आयत 8. वहां **कुछ समय बिताने की बाद** भी जब किसी ने **रिबका** को छेड़ना या बुरी नज़र से नहीं देखा, तब **इसहाक** अपने व्यवहार के प्रति कुछ असावधान सा हो गया। वह सार्वजनिक स्थान में जहाँ शायद सब उसे देख सकते थे, अपनी पत्नी को प्रेम स्पर्श कर रहा था। वह जो कर रहा था उसके लिए जो मूल शब्द यहाँ आया है वह מְצַחֵק *(त्साखाक़)* है, जिसका ज़्यादातर अर्थ "हँसना" "ठट्ठा करना" या "क्रीड़ा करना" होता है।[4] वह शब्द जो इसहाक के नाम पर यमक बनाता है (יִצְחָק, *यित्सखाक़)*, पहले भी इसहाक के जन्म के समय ऐसी ही हंसी देखने को मिलती है (21:6; देखें 17:17; 18:12) साथ ही साथ उस समय भी जब इश्माएल ने इसहाक पर ठट्टा किया था (21:9)। इस सन्दर्भ में, यह अंतिम संकेतार्थ था क्रीड़ा का। इसका वास्तविक अर्थ क्या था?

किसी-किसी लेख में, *त्साखाक* का अर्थ शारीरिक गतिविधि जिसमें यौन क्रिया के संकेत मिलते है, जैसे पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ़ पर उसके साथ "खिलवाड़/खेल" *(त्साखाक)*, करने का झूठा आरोप लगाया था जिसका अर्थ है उसकी तरफ कामुकता से बढ़ना (39:14, 17)। बिलकुल यही शब्द सीनै पर्वत के नीचे किए गए इस्राएल द्वारा किए गए व्यवहार के लिए ही हुआ है: सोने के बछड़े के सामने, वे "फिर बैठकर खाया पिया, और उठ कर खेलने लगे" (निर्गमन 32:6)। इस्राएलियों ने न केवल उस समय मूर्तिपूजा का पाप किया, परंतु वे एक तरह के यौन "क्रीड़ा" में भी सहभागी हुए (*त्साखाक*, "अनैतिक भोग-विलास") जो प्राचीन पूर्व के उर्वरता मत के मानने वालों के द्वारा अभ्यस्त किया जाता था (देखें गिनती 25:1-9)।

यहाँ वचन ये नहीं कहता कि इसहाक और रिबका सार्वजनिक स्थान में खुल्लम खुल्ला या निर्लजता से यौन क्रीड़ा में लगे थे। उनका संपर्क शायद शारीरिक स्पर्श, गले लगना और चुम्बन करने से ज़्यादा और कुछ नहीं था जैसा हर पति पत्नी करते है यह सोच कर की कोई उन्हें नहीं देख रहा है। इसके साथ-साथ NASB में "लाड़ करना," अन्य अनुवादों में "प्यार करना" (NRSV), "मोह दिखाना" (NKJV), और "गले लगना और चुम्बन करना" (CEV) जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है। जब **पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की** से झाँका इसहाक और रिबका को साथ-साथ देखा, तो वह तुरंत ही इस बात को समझ गया की उनका व्यवहार भाई बहन जैसा नहीं है। निःसंदेह वे भयभीत और शर्मिंदा हुए थे यह जान कर कि राजा को उनके झूठ का पता चल गया है।

आयत 9. राजा ने **इसहाक** को बुलवाया और उससे यह कह कर पूछताछ कि

देखो वह तो निश्चय तेरी पत्नी है! चूंकि वह बात बिल्कुल सत्य थी, उसने इसहाक से आगे और सवाल किए: **फिर तू ने क्योंकर उसको अपनी बहिन कहा?** अबीमेलेक को इस बात का एहसास था कि उसके लिए इसहाक का - जो गरार ने एक परदेशी की नाई था - जिसे उसने अपने देश और लोगों के मध्य ग्रहण किया था उसका इस तरह का झूठा व्यवहार बुरे धोखे के समान था वाला था। विडम्बना यह थी की यह पलिश्ती राजा सत्य की ओर था, इसहाक, जो प्रतिज्ञा का पुत्र था, ने झूठ बोला था ठीक वैसे ही जैसे दो बार उसके पिता ने भी किया था। यह देखकर कि अब वह और झूठ को नहीं छिपा सकता, **इसहाक** ने इस बार सत्य कहा, की वह डर गया था कि ऐसा न हो कि रिबका के **कारण** उसकी **मृत्यु हो**। यह कुछ वैसा ही समीकरण या बात थी जिसे अब्राहम ने भी इस्तेमाल किया था जब वह पलिश्तियों के मध्य रह रहा था (20:11)।

आयत 10. तब **अबीमेलेक** ने इसहाक से एक और प्रश्न **पूछा तू ने हम से यह क्या किया?** जिसका उसे कोई उत्तर नहीं मिला, परंतु सत्य बिल्कुल स्पष्ट रूप से सामने आ चुका था। इसहाक ने राजा और उसके लोगों को एक दुविधा पूर्ण स्थिति में खड़ा कर दिया था: कोई भी राजा का व्यक्ति कभी भी रिबका के साथ बड़े आराम से **सो सकता** था ("यौन संबंध स्थापित करना"; NCV) और अगर कहीं ऐसा हो जाता तो सारा **दोष** बोध उसके लोगों पर ही पड़ता। यहाँ पर "दोष" אָשָׁם *(अशाम)* को इस तरह से अनुवाद किया गया है पापपूर्ण "कार्य," पाप का "दोष," या इस सन्दर्भ में पाप का "परिणाम" या "दंड"।[5] राजा का उत्तर बिल्कुल सीधा और प्रासंगिक था: अपनी जान बचाने के लिए उसने पूरे राज्य को ईश्वरीय क्रोध के खतरे में दाल दिया था।

आयत 11. यह सारी घटना इसहाक के लिए शर्मिंदगी भरी थी। इसलिए वह अबीमेलेक को उत्तर के रूप में कुछ न कह सका परंतु चुपचाप वह खड़ा रहा। फिर भी राजा ने उन पर दया का प्रदर्शन करते हुए उन्हें यह आश्वासन दिया कि वह और रिबका उसकी सुरक्षा में रहेंगे। उसने यह आज्ञा भी दी, कि जो **कोई इस पुरुष और उस स्त्री** को छूएगा, **सो निश्चय मार डाला जायेगा**।

इसहाक की संपत्ति के कारण पलिश्तियों का उससे डाह करना (26:12-17)

[12]फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया, और उसी वर्ष में सौ गुणा फल पाया: और यहोवा ने उसको आशीष दी। [13]और वह बढ़ा और उसकी उन्नति होती चली गई, यहां तक कि वह अति महान पुरुष हो गया। [14]जब उसके भेड़-बकरी, गाय-बैल, और बहुत से दास-दासियां हुई, तब पलिश्ती उससे डाह करने लगे। [15]सो जितने कुंओं को उसके पिता अब्राहम के दासों ने अब्राहम के जीते जी खोदा था, उन को पलिश्तियों ने मिट्टी से भर दिया। [16]तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है। [17]सो इसहाक वहां से चला गया, और गरार के नाले में तम्बू खड़ा करके वहां रहने लगा।

आयत 12. कोई पलिश्ती उनके साथ बुरा व्यवहार न करें इसलिए अबीमेलेक चाहता तो उसने देश छोड़ कर जाने को कह सकता था, जैसा की फिरौन ने कई साल पहले अब्राहम और सारा के साथ किया था (12:19, 20)। इसके बजाये, राजा ने उन्हें अपने देश में बसे रहने की आज्ञा दी।

एक चरवाहा और भेड़ बकरियां पालने वाले के अलावा, इसहाक ने खेत में बोने का काम भी आरम्भ किया। **उसने उसी भूमि में बोया और उसी वर्ष सौ गुना काटा भी**। प्राचीन काल से ही, खानाबदोश विश्व के अर्द्ध शुष्क इलाकों में बोते आ रहे थे; फिर भी, सूखी भूमि में बोना काफी कठिन था उन दिनों में और निश्चित रूप से किसी का बोया हुआ सौ गुना फल नहीं लाता होगा। इसहाक वह अकेला कुलपति था जिसके बारे में यह पता चलता है कि वह खेती करता था। इस तरह उसके बोने के द्वारा सौ गुना फल आना निःसंदेह इस बात को प्रकट करता है कि परमेश्वर ने उसे वहां रहते हुए आशीषित किया था।

आयत 13. इसहाक ऐसे ही एक धनी व्यक्ति था, उसे अपने पिता अब्राहम से भी बहुत सी संपत्ति प्राप्त हुई थी (25:5)। फिर भी, वचन इस बात को बताता है कि वह और भी **धनी हो गया और उसकी संपत्ति बढ़ गयी**। यही क्रिया גָּדַל *(गदल)* का प्रयोग इस आयत में तीन बार हुआ है जो इसहाक की अत्यंत बढती संपत्ति को प्रमाणित करता है। यथा शब्द देखें तो, "गदल" का अर्थ है "बड़ा या महान बनना" इसहाक महान और शक्तिशाली बन गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे यह धन और संपत्ति के द्वारा आशीषित किया था। यह परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा की पूरे होने की शुरुआत थी जो उसने इसहाक से की थी जब उसने उससे कहा था कि वह इसी देश में बसा रहे (26:2-4)।

आयत 14. लेखक इसहाक की संपत्ति का वर्णन **उसके गाय बैल, भेड़ बकरी और दास दासियों** की चर्चा करते हुए करता है। अब्राहम के पास 318 दास थे जो चरवाहे-योद्धा थे (14:14), और इसहाक के परिवार के पास अपने पिता से भी बढ़कर या ज़्यादा संपत्ति थी। इसलिए पलिश्ती लोग उनके मध्य रह रहे एक परदेशी के पास इतनी संपत्ति और उसकी प्रगति को देखकर उससे डाह करने लगे थे। इब्री क्रिया קָנְאָה (*काना*, "डाह") तीव्र जलन रखने को दर्शाता है - शरीर के काम (गला. 5:19-21) - जो लोगों को दूसरों की वस्तुओं का लालच करने के लिए प्रेरित करता है (निर्गमन 20:17)।

आयत 15. स्थानीय लोगों ने **अब्राहम के दासों द्वारा खोदे गए सभी कुंओं** की स्मृति को बनाये रखा, और बाद में **उन्हें मिट्टी से भर दिया**। अब्राहम की इस शिकायत के बाद कि पलिश्तियों ने उसके द्वारा खोदे गए एक कुएं पर कब्ज़ा कर लिया है, पहले अबीमेलेक ने उसे उसको लौटा दिया (21:25-32)। परंतु इसहाक का स्वभाव थोड़ा ज़्यादा सहनशील या दब्बू किस्म का था। वचन इस बात पर कोई प्रकाश नहीं डालता कि इसहाक ने उसके काल के अबीमेलेक से किसी प्रकार की कोई शिकायत कि थी, और न ही दोषियों को सज़ा देने हेतु उसने कोई कदम उठाया था।

आयत 16. इसहाक की व्यक्तिगत संपत्ति और उसकी सेना को देख कर राजा भयभीत हो गया। **इसलिए उसने इसहाक से कहा हमारे पास से चला जा;**

क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है। "तू बहुत सामर्थी हो गया है" यह शब्द עָצַם *(अत्सम)* क्रिया से निकला है। यह बाद में निर्गमन 1:7, 20 में भी देखने को मिलता है, जहाँ इस्राएली गिनती में "अत्यंत सामर्थी हो गए" जिसके कारण फिरौन के हृदय में दर समा गया (निर्गमन 1:9, 10)।

आयत 17. जैसा की अबीमेलेक ने उससे कहा, **इसहाक** गरार को छोड़ कर गरार के नाले के पास अपना तम्बू खड़ा किया, जो अभी भी पलिश्तियों का ही क्षेत्र था। नाले/वैली के लिए जो इब्री शब्द का इस्तेमाल हुआ है वह נַחַל *(नखल)* है जिसका अर्थ है घाटी या नाला जिसे आजकल इस्राएल में "वादी" भी कहते है। इस तरह के नदी का ताल आमतौर पर सूख जाता है, परंतु बारिश के मौसम में यह रोष के साथ बहने लगता है।[6] कुआँ खोदने के लिए वादी एक बहुत ही उत्तम जगह साबित होती है क्योंकि पानी जब तक एक मिट्टी के नीचे एक चट्टान न बना ले तब तक वह चट्टानों के, बालू के, और मिट्टी के अन्दर समा जाता है। वहां जाकर वह साफ़ स्वच्छ जल कुंड के समान बैठ जाता है। इस तरह का कुआँ उस क्षेत्र के बहुत से खानाबदोशों के लिए पानी की व्यवस्था कर सकता था।[7]

इसहाक के कुंओं को लेकर पलिश्तियों से झगड़ा होना (26:18-22)

[18]तब जो कुएं उसके पिता अब्राहम के दिनों में खोदे गए थे, और अब्राहम के मरने के पीछे पलिश्तियों ने भर दिए थे, उन को इसहाक ने फिर से खुदवाया; और उनके वे ही नाम रखे, जो उसके पिता ने रखे थे। [19]फिर इसहाक के दासों को नाले में खोदते-खोदते बहते जल का एक सोता मिला। [20]तब गरारी चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा किया, और कहा, कि यह जल हमारा है। सो उसने उस कुएं का नाम एसेक रखा इसलिये कि वे उससे झगड़े थे। [21]फिर उन्होंने दूसरा कुआं खोदा; और उन्होंने उसके लिये भी झगड़ा किया, सो उसने उसका नाम सित्रा रखा। [22]तब उसने वहां से कूच करके एक और कुआं खुदवाया; और उसके लिये उन्होंने झगड़ा न किया; सो उसने उसका नाम यह कह कर रहोबोत रखा, कि अब तो यहोवा ने हमारे लिये बहुत स्थान दिया है, और हम इस देश में फूलें-फलेंगे।

आयत 18. भले ही **इसहाक** गरार शहर को छोड़ कर गरार के नाले के पास जा बसा था तब भी पानी और **कुएं** पर अपने अधिकार को लेकर जो झगड़ा उसके पिता के दिनों से चला आ रहा था वह ख़त्म होने का नाम नहीं ले रहा था। पलिश्ती अपने मध्य में रहने वाले परदेशियों से हमेशा डाह रखते और डरते भी थे। उन्होंने अब्राहम के जीवन काल में उसके द्वारा **खोदे गए** कुंओं को **भर** दिया था। इसके बदले में इसहाक ने बदले लेने की भावना से किसी प्रकार के रोष या क्रोध का प्रदर्शन नहीं किया। जिसके कारण शायद दोनों के लोगों के बीच युद्ध भी छिड़ सकता था, बल्कि उसने और उसके दासों ने धूल मिट्टी और मलबे को हटा कर पुनः उन कुंओं को इस्तेमाल करने के योग्य बनाया; और उसने उन्हें वही **नाम** दिया **जो उसके पिता** अब्राहम ने दिया था। बाद में किया गया यह कार्य इस बात पर ज़ोर देता है कि गरार से उसका निकाला जाना अन्यायपूर्ण था क्योंकि उन

कुंओं पर उसका उचित और कानूनी अधिकार था। और तो और उन कुंओं का नाम अब्राहम और पहले के अबीमेलेक के मध्य हुई संधि का भी स्मरण कराता है, और अब्राहम और उसकी संतान के द्वारा उसके इस्तेमाल करने के अधिकार पर भी ज़ोर डालता है (21:22-32)।

आयत 19. कुछ पुराने कुंओं को दुबारा खोदने के अलावा **इसहाक के दासों** ने घाटी में **खुदाई भी की** जिसके परिणामस्वरूप **बहते हुए जल के कुएं** उन्हें और प्राप्त हुए। पानी की प्यास दक्षिण कनान की कभी न ख़त्म होने वाली प्यास थी और ऐसे समय में भूमि के नीचे से बुदबुदाते हुए जल के सोते का निकलना सोने पर सुहागा जैसा था।

आयत 20. इस नई खोज ने एक और तकरार को जन्म दे दिया, क्योंकि **गरार के चरवाहे इसहाक के चरवाहों से यह कह कर झगड़ने लगे कि यह जल हमारा है!** मूसा ने यहाँ जिस क्रिया का इस्तेमाल किया है वह है "झगड़े" רִיב *(रिब)* जो हमें कुछ इसी तरह के टकराव का स्मरण दिलाता है जो कभी अब्राहम के चरवाहों और लूत के चरवाहों के मध्य अपने-अपने जानवरों के लिए पर्याप्त जल और चरागाह को लेकर हुआ था। इस सन्दर्भ में एक संज्ञा के समान नज़र आया है, और NASB इसका अनुवाद "खटपट/दरार" के रूप में करती है (13:7)। इस बार इसहाक ने **उस कुएं का नाम** इसेक עֵשֶׂק *(इसेक)* क्योंकि (पलिश्ती) **उससे झगड़ा** किया था। यह शब्द शायद इब्री शब्द "विवाद करना" עָשַׂק *(अशक)* पर एक शब्दों के खेल के समान था।

आयत 21. पहले वाले कुएं को लेकर जा झगड़ा समाप्त हुआ, तब इसहाक के लोगों ने एक और **कुआं खोदा**; पर उसे भी लेकर झगड़ा शुरु हो गया, इसलिए **उसने उसका नाम सितनाह** שִׂטְנָה *(सितनाह)* रखा, जिसका अर्थ है "द्वेष/दुश्मनी" या "दोष।"[8] कुछ इसी तरह का शब्द שָׂטָן *(शैतान)*[9] भी और कई जगहों पर निश्चयवाचक उपपद के साथ इस्तेमाल हुआ है, जिसका अर्थ है "विरोधी" या "दोष लगाने वाला" अर्थात "शैतान" (अय्यूब 1:6; 2:1; ज़कर्याह 3:1)। प्रकाशितवाक्य 12:9, 10 में युहन्ना "शैतान" की पहचान "दुष्ट," "अजगर"[10] और "भाइयों पर दोष लगाने वाले" के रूप में करता है।

आयत 22. दो कुंओं पर झगड़ा और तकरार होने के बाद आपसी मतभेद और लड़ाई को खत्म करने के उद्देश्य और अपने पड़ोसियों से संबंध सुधारने के उद्देश्य से इसहाक उन कुंओं को छोड़ देता है वह **वहां से** दूर जाकर **एक और कुआं खोदता है**। इस बार वह अपने लोगों के साथ अबीमेलेक के लोगों से बहुत दूर जाकर बसा ताकि वे लोग अब कि बार उससे **झगड़ा न** करे। इसलिए उसने उसका नाम **रहोबोत** רְחֹבוֹת *(रेखोबोथ)* रखा, जिसका अर्थ है "चौड़ा" या "फैला हुआ स्थान"। "रहोबोत" के विषय में यह माना जाता है कि यह वादी रूहेईबे के द्वारा "एर रूहेईबे" का आधुनिक नाम है, जो तकरीबन बीस मील दक्षिणपश्चिम बेर्शेबा में स्थित है। नेगेव (दक्षिण इस्राएल में पाया जाने वाला मरुस्थल) में यहीं सबसे बड़े कुएं पाए जाते है, और कुछ इसे इसहाक के कुएं भी मानते है।[11] "रहोबोत" नाम के पीछे जो सोच है वह यह है कि परमेश्वर ने हमारे लिए **स्थान**

बनाया है। इसहाक के लोगों के पास अब अपनी जगह थी (रहने का स्थान) जहां वे फल **फूल** और बढ़ सकते थे।

इसहाक बेर्शेबा में (26:23-33)

बेर्शेबा में यहोवा का दर्शन (26:23-25)

[23]वहां से वह बेर्शेबा को गया। [24]और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा, मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूं; मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और अपने दास अब्राहम के कारण तुझे आशीष दूंगा, और तेरा वंश बढ़ाऊंगा [25]तब उसने वहां एक वेदी बनाई, और यहोवा से प्रार्थना की, और अपना तम्बू वहीं खड़ा किया; और वहां इसहाक के दासों ने एक कुआं खोदा।

आयत 23. गरार के बृहद स्थानों में पलिश्तियों के साथ हुए बहुत सारे झगड़ों के बाद, इसहाक अपने परिवार के साथ **बेर्शेबा** तक उत्तर पूर्वी मरुस्थल की तरफ चला गया।

आयत 24. उसी **रात** वे अपने नए स्थान तक पहुँच गए, तब **परमेश्वर ने इसहाक को दर्शन दिया** और स्वयं की पहचान उसके **पिता अब्राहम के परमेश्वर** के रूप में प्रस्तुत किया। जब परमेश्वर ने इसहाक के सामने, फिर याकूब (28:13), और फिर बाद में मूसा के सामने (निर्गमन 3:6) स्वयं को प्रगट किया, उसने अकसर इन शब्दों के साथ शुरुआत की "में तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूँ" उसन कभी भी यूँ नहीं कहा "में तेरे पिता तेरह का परमेश्वर हूँ" क्योंकि परमेश्वर के द्वारा अब्राहम को मेसोपोटामिया से बाहर बुलाये जाने के साथ ही बाइबल के इतिहास का एक नया युग प्रारंभ हुआ। इसहाक और उसके बाद आने वाले सभी लोगों को अब्राहम के परमेश्वर और उसके पिता तेरह के देवताओं से खुद को अलग करना था (यहोशू 24:2)।

इस दर्शन देने के पीछे परमेश्वर इसहाक को ढाढ़स और तसल्ली देना चाहता था। परमेश्वर ने कहा **मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ**। उसने कुछ इसी तरह से अब्राहम को भी कहा था जब मेसोपोटामिया में उन चार राजाओं पर उसने जीत हासिल की थी (14:14-16)। हो सकता है अब्राहम डरा हुआ हो कि कहीं वे पुनः युद्ध करने के लिए लौट कर ना आये, इसलिए परमेश्वर ने उसे यह कह कर तसल्ली दी कि वह अब्राहम के "ढाल" ही (15:1)। इसी तरह, जैसा 26:7 में पढ़ने को मिलता है कि पलिश्तियों के विषय इसहाक का डर हर जगह उसका पीछा कर रहा था। वह अपने द्वारा किसी भी तरह की हिंसा से घबराता था और शायद इसलिए उसने अपने कुंओं को जो कानूनी तौर पर उसके थे उन्हें जाने दिया, और उनसे दूर और दूर जाता रहा। इसहाक के साथ अपनी उपस्थिति की पुनः पुष्टि करना परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण था क्योंकि उसने अपनी वाचा को फिर से उसके साथ दोहराया था जो उसने उसके पिता के साथ बाँधी थी **क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और अपने दास अब्राहम के कारण तुझे आशीष दूंगा, और तेरा**

वंश बढ़ाऊंगा। पुराने नियम में "मेरे दास" और "परमेश्वर की दास" जैसी उपाधियाँ विश्वासियों के लिए इस्तेमाल होती थी और जो एक सम्मान की बात थी (गिनती 12:7, 8; 14:24; यहोशू 24:29; 2 शमूएल 3:18; अय्यूब 1:8)।

आयत 25. इस आश्वासन के बाद, इसहाक का सहज प्रति उत्तर यही था कि वह **एक वेदी** बनाये और **परमेश्वर का धन्यवाद करें**। ऐसा करने के द्वारा उसने अपने पिता के उदाहरण का अनुसरण किया (12:7, 8; 13:18; 22:9)। जो कथन उसने परमेश्वर के विषय में कहा वह इस बात का संकेत देता है कि वह वेदी आराधना का स्थान थी। वहां उसने सारी संपत्ति की आशीषों के लिए, जब तक वह परदेशी होकर पराये देश में रहा वहां उसकी लोगों के मध्य उसका ध्यान रखने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया और उसकी स्तुति की। पलिश्तियों के साथ इतने कड़वे अनुभवों के बाद भी वचन हमें बताता है कि उसने वहाँ **अपना तम्बू गाड़ा**; और एक बार फिर से उसके **दासों ने वहाँ एक कुआं खोदा**।

अबीमेलेक के साथ इसहाक की संधि (26:26-33)

[26]तब अबीमेलेक अपने मित्र अहुज्जत, और अपने सेनापति पीकोल को संग ले कर, गरार से उसके पास गया। [27]इसहाक ने उन से कहा, तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था; सो अब मेरे पास क्यों आए हो? [28]उन्होंने कहा, हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है, कि यहोवा तेरे साथ रहता है: सो हम ने सोचा, कि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, सो हमारे तेरे बीच में शपथ खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएं; [29]कि जैसे हम ने तुझे नहीं छूआ, वरन तेरे साथ निरी भलाई की है, और तुझ को कुशल क्षेम से विदा किया, उसके अनुसार तू भी हम से कोई बुराई न करेगा। [30]तब उसने उनकी जेवनार की, और उन्होंने खाया पिया। [31]बिहान को उन सभों ने तड़के उठ कर आपस में शपथ खाई; तब इसहाक ने उन को विदा किया, और वे कुशल क्षेम से उसके पास से चले गए। [32]उसी दिन इसहाक के दासों ने आकर अपने उस खोदे हुए कुएं का वृत्तान्त सुना के कहा, कि हम को जल का एक सोता मिला है। [33]तब उसने उसका नाम शिबा रखा: इसी कारण उस नगर का नाम आज तक बेर्शेबा पड़ा है।

आयत 26. इस अध्याय के आरम्भ में हम देखते है की, इसहाक नेगेव से उत्तर पूर्व को गया ताकि गरार के एक राजा अबीमेलेक से भेंट कर सके (26:1)। अब की परिस्थिति कुछ विपरीत थी, इस बार **अबीमेलेक गरार से** दक्षिण पूर्व को गया ताकि इसहाक से बेर्शेबा में भेंट कर सके। राजा अपने साथ दो और अधिकारियों को लेकर गया: उसका सलाहकार **अहुज्जत** और **पीकोल जो उसकी सेना का सेनापति था।**

यह नाम "पीकोल" कुछ परिचित सा है जो अब्राहम के समय में भी मौजूद था (21:22, 32)। या यह भी संभव है की "पीकोल" सेना में दी जाने वाली कोई उपाधि हो, ठीक वैसे जैसे "अबीमेलेक" भी शाही उपाधि थी। एक और संभावना यह हो सकती है कि यह पीकोल पुराने पीकोल के घराने का ही हो और उसके नाम पर इसे भी यही नाम दिया गया हो।[12]

"अहुज्जत" पूरे पुराने नियम में केवल एक बार यही देखने को मिलता है। पीकोल, सेना में उच्च पद पर होने के साथ-साथ, शायद राजा का "मित्र" या करीबी सलाहकार भी था (KJV; NEB)। प्राचीन पूर्व और इस्राएल के राज तंत्र के इतिहास में भी यह बात देखने को मिलती है कि राजा के पास न केवल सेना या रक्षा सलाहकार होते थे (जैसे दाऊद योआब पर भरोसा करता था; 2 शमूएल 5:8; 1 इतिहास 11:6), परंतु उसके पास कुछ अच्छे सलाहकार मित्र भी थे जिन पर उसे बहुत भरोसा था (जैसे कि हूशै, जिसका नाम दाऊद के "मित्र" के रूप में आया है; 2 शमूएल 15:37; 16:16)।

आयत 27. चूंकि अबीमेलेक के साथ कोई सेना नहीं थी, इसहाक ने यह माना की उसका आना मित्र भाव और शान्तिः दूत के रूप में ही है। फिर उसने उनकी कोई बहुत आवभगत नहीं की क्योंकि उन्होंने उसे गरार छोड़ने के लिए मजबूर किया था और उसके और उसके लोगों द्वारा खोदे गए कुंओं पर भी कब्ज़ा कर उनके साथ बुरा व्यवहार किया था। इसहाक उनके बीच कभी आनंद से नहीं रह सका था, तब उसने उनसे पूछा, **तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था; सो अब मेरे पास क्यों आए हो?**

यह जानकार कि इतने वर्ष पलिश्तियों के मध्य रहते हुए इसहाक का स्वभाव दब्बू और सामना न करने वालों जैसे था, यहाँ अचानक उसके चरित्र और स्वभाव में एक बड़ा परिवर्तन दिखाई पड़ता है। क्या वह अब खुले रूप से अपने विद्वेष का प्रदर्शन कर रहा था, या केवल अपना क्रोध जाता रहा था क्योंकि अबीमेलेक अपनी सेना के साथ नहीं आया था? हम उसके इस आवेग का कारण नहीं जानते, परंतु इतना कहा जा सकता है कि इसहाक अपने धीरज के छोर तक आ गया था और अपने न्यायसंगत क्रोध का प्रदर्शन कर रहा था।

आयतें 28, 29. इसहाक का इस तरह से उनसे प्रश्न ने उन पलिश्तियों को अचम्भे में दाल दिया होगा। वे दोष की स्थिति में खड़े थे और उन्हें अपने कार्यों का बचाव भी करना था। उन्होंने प्रतिकूल होकर उत्तर नहीं दिया; बल्कि, उन्होंने इसहाक से मैत्रीपूर्ण भाषा में बातें की: **हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है, कि यहोवा तेरे साथ रहता है** (देखें 21:22)। इसका कतई यह अर्थ नहीं है कि यह पलिश्ती "परमेश्वर" (यहोवा) पर भरोसा करते थे कि वही अन्य देवी देवताओं के बढ़कर एक मात्र सच्चा ईश्वर है' पर उन्होंने इसहाक के परमेश्वर को अपने अन्य ईश्वरों से अधिक शक्तिशाली पाया था। इसलिए, बुद्धिमानी इसे में थी कि उसे किसी प्रकार से चोट न पहुँचाया जाए और न ही उसके क्रोध को भड़काया जाये। यहोवा ने न केवल इस परदेशी को नुकसान से बचाया था परंतु अन्य लोगों द्वारा तरह-तरह की बाधाओं के बावजूद, जैसे उसके कुंओं को भर देना या उससे चुरा लेना, उसे आशीषित किया, धन संपत्ति देते हुए शक्तिशाली बनाया।

इसलिये पलिश्तियों ने उसके सामने एक प्रस्ताव रखा जो दोनों के लिए फायदेमंद साबित होता; एक साथ **प्रतिज्ञा** करके **वाचा बांधना**, और आपस में एक अनाक्रमण अनुबंध, एक ऐसी प्रतिज्ञा जिसके अंतर्गत इसहाक के लोग पलिश्तियों को **कोई नुकसान नहीं पहुँचाएंगे**, ठीक वैसे ही जैसे अबीमेलेक के

लोगों ने इसहाक और उसके लोगों को **नहीं छूआ** (नुकसान) था, परंतु **शान्ति से उसे बाहर चले जाने को कहा** था (देखें 21:23)।

अभी तक इसहाक ने अपनी सेना या लोगों को पलिश्तियों की सेना से कम ही आँका होगा। पर यहाँ पलिश्तियों के राजा के द्वारा कहे जा रहे शब्द कुछ और ही संकेत दे रहे थे, क्योंकि राजा अधिक सामर्थी होने की हैसियत से वाचा के नियमों का आदेश नहीं दे रहा था। परंतु इसके विपरीत वह स्वयं एक ज़ोर स्थिति में होकर इसहाक से शान्तिः की प्रार्थना कर रहा था।, जिससे हमें यही पता चलता है कि वह इसहाक की सेना और शक्ति को अपने राज्य के लिए खतरा मान रहा था। राजा और उसके सलाहकार एक वाचा बांधना चाहते थे जिसके अंतर्गत उन्हें भविष्य में शांतिपूर्ण संबंधों का आश्वासन मिल सके। अबीमेलेक ने अपनी प्रार्थना के अंत में प्रशंसा भरे शब्दों में कहा **तू तो यहोवा की ओर से धन्य है**।

राजा ने ऐसा यह कथन इसहाक की सफलता या सौभाग्य का आकलन करके कहा होगा। आमतौर पर एक चरवाहे को गरार से जहाँ उसने उत्तम पानी और चरागाह का प्रबंध बना लिया था, ऐसे सूखे मरुस्थल में भेजना, उसके भेड़ बकरियों और चरवाहों के लिए बहुत ज़्यादा नुकसान दायक साबित हो सकता था। परंतु इसहाक के साथ ऐसा नहीं हुआ होगा, जब भी राजा के लोगों ने इसहाक और उसके लोगों को बाहर या किसी दूर जगह भेजा होगा हर बार उन्होंने जल और चारा का कोई और स्रोत ढूंढ लिया होगा। अंत में अबीमेलेक ने यही सोचा होगा के वह इन्हीं उपायों का इस्तेमाल करके इसहाक को बाहर नहीं कर सकता और उसने इस बात का एहसास किया होगा कि यहोवा ही एक के बाद एक नए-नए कुएं बनाने में इन लोगों की सहायता कर रहा है और आशीष भी दे रहा है।

आयत 30. पुरानी प्रथा का मान रखते हुए, इसहाक ने वाचा के सहभागी के रूप में अपने लोगों और अबीमेलेक और उसके साथ आये हुए लोगों के लिए एक भोज का प्रबंध किया (देखें 31:44, 46, 54)। यह अबीमेलेक की मेहमान नवाज़ी में इसहाक द्वारा एक अच्छे मेज़बान होने का उदाहरण प्रस्तुत करना ही नहीं था। परन्तु वाचा की स्थापना की प्रक्रिया में होने वाला एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी था। सारांश में कहें तो, इसहाक जिसने इस भोज का प्रबंध किया था उसने वाचा को स्वीकार कर लिया था[13] वाचा की स्थापना में किया जाने वाला भोज दो समूहों के मध्य कभी न टूटने वाले भाईचारे के संबंधों पर मुहर लगाने जैसा था।

आयत 31. अगली **सुबह**, जब वे विदा होने को **तैयार हुए** तब उन्होंने **प्रतिज्ञाओं का आदान-प्रदान किया** (देखें 21:31)। शाब्दिक रूप से इब्रानी में यहाँ "आपस में शपथ खाई" दर्शाता है कि वाचा पूरी हुई। तब अबीमेलेक और उसके लोग **शांति से विदा हुए**।

आयत 32. इस आयत में उसी विचार की कड़ी को वापस जोड़ा जा रहा है जो 26:26-31 में टूट गयी थी। जब इसहाक बेर्शेबा में आया चुका, तब उसने वहां एक वेदी बनाई और परमेश्वर की आराधना की। और फिर वहीं ठहरने के उद्देश्य से अपना तम्बू भी गाड़ा। उसके कुछ दासों ने वहां भी और कुएं खोदना शुरु कर दिया (26:25)। इसहाक और अबीमेलेक के बीच शान्ति से वाचा की

स्थापना के वृत्तांत को लिखने के बाद मूसा वापस कुंओं की चर्चा पर लौटता है। वह लिखता है कि **उसी दिन उसके दासों** ने उसे आकर बताया की **हमें जल का सोता मिला है**।

कुछ समय के लिए पलिश्तियों ने इसहाक और उनसे लोगों को एक के बाद एक अपने कुंओं को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया था; पर अब उनको अभीमेलेक से डरने की कोई ज़रूरत नहीं थी। जैसा की बुद्धिमान ने लिखा है "जब किसी का चाल चलन यहोवा को भावता है, तब वह उसके शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है" (नीति. 16:7)।

आयत 33. इसहाक के लोगों द्वारा जब एक और सोते की खोज हुई तब वचन बताता है कि उसने उसका नाम **शीबा** रखा, जिसका अर्थ है "शपथ।" यह नाम इसहाक और अबीमेलेक के मध्य हुई संधि का उल्लेख करता था (26:31)। पहले इसहाक के दासों ने अब्राहम के जीवन काल में उसके लोगों द्वारा खोदे गए कुंओं को दुबारा से खोदा था, और अपने पिता द्वारा दिया गया नाम ही उन्हें फिर से दिया था (26:18)। यहाँ पर, जो नाम इसहाक के कुंओं से जुड़ा था वह उस स्थान को अब्राहम के द्वारा दिए नाम के समान ही प्रतीत हो रहा था। जब अब्राहम ने पहले वाले अबीमेलेक के साथ वाचा बाँधी और कुंओं पर होने रहे विवादों को शांत किया था, तब उसने पलिश्ती राजा को सात मेमने दिए और उस स्थान का नाम "बेर्शेबा" रखा। जैसा हमने पहले भी देखा था בְּאֵר *(बिएर)* का अर्थ है "कुआं" और שֶׁבַע *(शिबा)* का अर्थ या तो "सात" है या "शपथ" (टिप्पणी देखें 21:31)।[14] इस परिस्थिति में ज़ोर इसहाक की शपथ पर दिया गया है। यह भाग यह बताते हुए समाप्त होता है कि आज तक **इसका नाम बेर्शेबा ही पड़ा है**।

एसाव की हित्ती पत्नियों पर इसहाक और रिबका का खेद ज़ाहिर करना (26:34, 35)

[34]जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, तब उसने हित्ती बेरी की बेटी यहूदीत, और हित्ती एलोन की बेटी बाशमत को ब्याह लिया। [35]और इन स्त्रियों के कारण इसहाक और रिबका के मन को खेद हुआ।

आयतें 34, 35. परमेश्वर की आशीषों के कारण जितनी भी बाधाएं और समस्याएँ पलिश्तियों ने इसहाक पर डाली वे इसहाक की संपत्ति को नष्ट न कर सकीं। फिर भी, **हित्ती स्त्रियों के साथ एसाव** का विवाह करना **इसहाक और रिबका** के दिल पर गहरी चोट की तरह था।

यह अंतिम भाग अध्याय 27 में घटित मनोभाव और घटना की कुछ पृष्ठभूमि प्रदान करता है। वचन इस बात को बताता है कि एसाव कुल **चालीस वर्ष का था** जब उसने दो हित्ती स्त्रियों **यहुदीत** और **बाशमत** से **विवाह कर लिया**।[15] एसाव ने क्यों अपने भाई याकूब के विपरीत तेरह के वंश के बाहर विवाह कर लिया? क्या उसने ऐसा अपने माता पिता की इच्छा का जानबूझकर अनादर करने की

मनसा से किया या आस पास ही विवाह करना विवाह करना ज़्यादा आसान था बजाए इसके की दूर तक यात्रा करके अपने दादा के घराने और देश हारान से पत्नी लाना ज़्यादा कठिन था? अपने पहलौठेपन के अधिकार के विषय में उसकी लापरवाही या असावधानी को देखते हुए, बाद में लिखी बात के होने की संभावना ज़्यादा लगती है (25:27-34)।

शायद कोई ऐसा भी सोच सकता है कि, "क्या एसाव के लिए एक योग्य पत्नी ढूँढने में इसहाक ने कोई रुचि नहीं दिखाई थी?" क्या एसाव के मामले में इसहाक ने अब्राहम द्वारा बाँधी गयी वाचा जिसके अंतर्गत परमेश्वर के लोगों का कनानी अन्य जाति स्त्रियों से विवाह करने पर पाबन्दी थी, को अनदेखा किया?[16] इसहाक एसाव को यह शिक्षा देने में कैसे विफल हो गया कि, उन्हें एक विशेष बुलाहट से बुलाया गया है और वे पृथ्वी की समस्त जातियों के लिए परमेश्वर की आशीष का मूल ठहरने हेतु वाहक का काम करेंगे? एसाव ने बचपन में ऐसी कुछ कहानियां तो अवश्य ही सुनी होंगी, फिर भी उन बातों का कोई असर उसपर देखने को नहीं मिलता है। वह परमेश्वर रहित (βέβηλος, *बेबेलोस)* होकर बड़ा हुआ (इब्रा. 12:16), जिसका अर्थ है वह पूरी तरह "सांसारिक"[17] ही था। उसके जीवन में परमेश्वर के लिए कोई स्थान नहीं था और न ही अपने माता पिता के लिए उसके हृदय थोड़ा भी सम्मान। वचन इस बात को बताता है कि एसाव का विवाह मन को खेदित करने वाला था: उसकी पत्नियां इसहाक और रिबका के दुःख का कारण बनी।

अनुप्रयोग

आत्मिक लाभांश (26:1-5)

परमेश्वर की आज्ञाकारिता उन लोगों के लिए जो विश्वासी है, प्रतिज्ञा की गयीं आशीषों को लाती है। इसहाक का जीवन कई वर्षों तक बड़ी समस्याओं या रोमांचक घटनाओं से दूर था। फिर भी वह सब तब बदला जब सूखे की मार उन पर पड़ी। कनान ऐसा देश था जो पूरी तरह से वर्षा के जल पर निर्भर था, जिससे मवेशियों और अन्य पालतू पशुओं के लिए घास उत्पन्न होती थी और सुखी भूमि को पर्याप्त नमी मिलती थी जिससे लोग खेती करके अपना भरण-पोषण कर सकें। जब उस भूमि पर सूखे की मार पड़ी तो वहाँ रहने वालों पर भारी संकट आ गया। इस नए कुलपति ने ज़रूर यह बात सुनी होगी की गरार और उसके आसपास के इलाकों में जहाँ वह पहले रहा करता था, अच्छी वर्षा हुई है, इसलिए वह अपने लोगों और पशुओं समेत उस स्थान की ओर निकल पड़ा।

गरार में आने के बाद उसने शायद मिस्र की ओर जाने की सोचा जहाँ पलिश्तियों के देश से ज़्यादा पानी, घास, और उपजाऊ भूमि उपलब्ध थी। परमेश्वर ने उसे दर्शन देकर मिस्र जाने को मना किया (26:2); उसे प्रतिज्ञा की भूमि पर ही रहना था। हो सकता है कि इसहाक को अपने पिता की मिस्र यात्रा का ज्ञान न हो, जो अब्राहम और सारा के विवाह के लिए मुसीबत साबित हुई

थी। इस तरह की घटना ने शायद इन माता पिता के घर में उसके जन्म पर भी सवालिया निशान लगा दिया होता अगर स्वयं परमेश्वर ने हस्तक्षेप न किया होता। क्या यह हो सकता है कि उसने सोचा कि इस बार परिस्थिति शायद कुछ अलग होगी - कि उसे अपने पिता की तरह मिस्रियों से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है? इसहाक के मन में क्या विचार कर रहा था इस बात की जानकारी बाईबल हमें नहीं देती है, पर उसने ज़रूर एक बार मिस्र जाने की सोचा होगा; इसलिए परमेश्वर ने उसे वहीं कनान में रहने की आज्ञा दी।

इसलिए की इसहाक का विश्वास मज़बूत हो और वह आज्ञाकारिता करना सीखे, परमेश्वर ने उसे वही सुन्दर सन्देश दिया जो कई अवसरों में उसने उसके पिता को भी दिया था। परमेश्वर ने वादा किया कि वह उसके साथ है, वह उसके वंशजों की गिनती को बढ़ाएगा और प्रतिज्ञा के देश कनान को उसके अधिकार में कर देगा। उसने इसहाक को चुनौती दी - ठीक वैसे ही जैसे उसने अब्राहम को दी थी - की वह परमेश्वर की आशीषें अपने द्वारा सारे जगत की जातियों तक पहुँचने दे (26:3, 4)। यहोवा ने आगे ये भी कहा कि गिनी हुई आशीषें उसे और उसके वंशजों को इसलिए नहीं दी जा रही है क्योंकि वे इसके योग्य है, परंतु अब्राहम की आज्ञाकारिता के आधार पर, जिसने परमेश्वर की आज्ञा को माना, उसकी विधियों और व्यवस्था का पालन किया था (26:5)। यह कथन शायद अब्राहम के उस बलिदान की तरफ इशारा करते हुए कहा गया था जहां उसने इसहाक को बलि देने की आज्ञा का भी पालन किया था। जब स्वयं परमेश्वर ने उसे ऐसा करने से रोका, उसने अब्राहम के साथ अपनी वाचा को पुनः दोहराया (22:15-18)। परमेश्वर ने उसे आशीषित करने का यह कारण बताया: "क्योंकि तूने मेरी बात मानी है" (22:18)।

अब्राहम की आज्ञाकारिता के विषय में परमेश्वर की गवाही मोरिय्याह पर्वत में घटित घटना का भी उल्लेख करती है, परंतु इसमें अब्राहम के सम्पूर्ण जीवन काल में की गयी आज्ञाकारिता शामिल है, जिसमें अंत में इसहाक को बलिदान कर देने की आज्ञा है। अब्राहम कोई सिद्ध मनुष्य नहीं था। बहुत स्थानों में हम पढ़ते है कि वह कभी डर से, या तर्क करते हुए, या कई बार अपने सोचे गए मार्ग को परमेश्वर के मार्ग से बेहतर समझने की गलती में उसने कई आज्ञा का उलंघन भी किया था (देखें नीति. 14:12)। फिर भी जैसे-जैसे समय बिताता गया वह विश्वास और आज्ञाकारिता में दृढ़ होता गया। चूंकि अब इसहाक भी इन सालों में काफी परिपक्व हो चुका था, परमेश्वर उसमें भी अपने पिता की तरह आत्मिक परिपक्वता और विश्वासपूर्ण आज्ञाकारिता देखता चाहता था। आगे पलिश्तियों के मध्य गरार में जो भी परीक्षा उसके सामने आने वाली थी उन सब के बावजूद परमेश्वर उसे विश्वास और आज्ञाकारिता की तरफ प्रेरित करने के लिए उन सभी आशीषों को देने की बात की जो उसने उसके पिता को दी थी।

वास्तव में यह सोचना कि परमेश्वर ने इसहाक को उसके पिता के कारण आशीषित किया - और यह कि वह अकसर लोगों को दूसरों के किए कार्यों के कारण आशीष देता है - कुछ अजीब सा प्रतीत होता है, पर यह सिद्धांत सम्पूर्ण बाईबल में पाया जाता है। बहुत ही बेहतरीन उदाहरण यूसुफ़ के जीवन में देखने

को मिलता है। (1) यूसुफ़ के विश्वास, खरे, और हृदय की पवित्रता की कारण, परमेश्वर ने उसे उठाया और पोतीपर जो राजा के अंग रक्षकों का प्रधान था उसे आशीषित किया (39:1-9)। (2) ठीक वैसे ही, परमेश्वर ने यूसुफ़ के कारण मिस्री जेलर और उसके कैदियों को भी आशीष दी (39:21-23; 40:8-15), और (3) फिरौन और उसके लोगों को भी (41:14-56)। (4) परमेश्वर ने याकूब और उसके पूरे परिवार को भी आशीष दी (45:4-15; 46:1-4; 47:5-12; 50:15-21), साथ ही साथ (5) प्राचीन पूर्व के कई और लोगों ने यूसुफ़ के कारण आशीषें पायीं (41:57)। बहुत से लोग यह कभी नहीं जानते होंगे की परमेश्वर उन्हें आशीषित कर रहा है अपने दास यूसुफ़ की कारण।

यही सिद्धांत आज भी लोगों के मध्य काम कर रहा है जिसे लोग समझ नहीं पाते है। बहुत सी "आत्मिक आशीषें" जो हम प्राप्त करते है वह उन धर्मियों के कारण है जिनसे हम अंजान है और शायद हमेशा अंजान ही रहेंगे। कितने धर्मी लोगों ने अपना बलिदान दिया मर भी गए ताकि आज हम उस आत्मिक और भौतिक स्वतंत्रता को प्राप्त कर सकें जिसका सपना उन्होंने देखा था? बहुत से लोगों ने आर्थिक, शारीरिक, और आत्मिक निवेश किया है हमारे सुनहरे भविष्य के लिए। इसमें सारे प्रेरित, और अन्य विश्वासी शामिल है जिन्होंने परमेश्वर के पुत्र मसीह पर अपने विश्वास के कारण सताव और मृत्यु भी सही। स्वयं प्रभु यीशु मसीह से बेहतर उदाहरण कौन हो सकता है, जिसने अपने सुसमाचार के कारण (2 तीमु. 1:10) हमारे पापों के प्राण देने तक विश्वासी रहने के कारण (इब्रा. 5:7-9; 1 कुरि. 15:3) और अपने महिमा पूर्ण पुनरुत्थान के कारण (1 कुरि. 15:4) "जीवन और अमरता" का वरदान हमें दिया।

कोई भी विश्वास का नायक सिद्ध नहीं था। दूसरी तरह हम सभी पापी थे जैसा हम आज भी है। कोई भी परमेश्वर के पास पूर्ण आत्मिक परिपक्वता के साथ नहीं आता; हम सभी एक बालक के समान ही अपनी आत्मिक यात्रा की शुरुआत करते है जो कभी-कभी ठोकर भी खाते और गिरते भी है। "वचन के शुद्ध दूध" को पीने की प्रक्रिया के द्वारा हम मज़बूत विश्वास विकसित कर सकते है (आत्मिक शक्ति/मान पेशियाँ) और इसी विश्वास के द्वारा "उद्धार के संबंध" में आज्ञाकारिता में भी बढ़ सकते है (1 पतरस 2:2)। हमें भी अब्राहम और इसहाक की तरह स्वयं को परमेश्वर की दया, अनुग्रह, और आशीषों (प्रतिज्ञाओं) स्मरण दिलाने की ज़रूरत है ताकि हम एक ऐसा जीवन जीएँ जो उसे भावता हो और उसकी महिमा करने वाला हो।

झूठ बोलने की विरासत (26:6-11)

परमेश्वर की आशीषों की प्रतिज्ञा को सत्य में (परन्तु ऐसा सदा नहीं होता), विश्वास की आज्ञाकारिता को उत्पन्न करना चाहिए। परमेश्वर की महान प्रतिज्ञाओं को पा लेने की बाद (12:1-3), जब अब्राहम कनान देश में पहुंचा और अकाल का सामना किया, उसने प्रतिज्ञा के देश को त्याग कर मिस्र में जाने का निर्णय लिया। इस गलत कदम के कारण, उसे अपनी जान बचाने के लिए, अपनी पत्नी के विषय में झूठ बोलना पड़ा (12:10-20)। बाद में, उसने वही पाप गरार

में भी दोहराया (20:1-18)। इन घटनाओं ने उसके वंशजों के लिए एक बुरा उदाहरण प्रस्तुत किया, जिनका झुकाव उसका अनुकरण करने की ओर था।[18] वह पुरानी कहावत "जैसा बाप वैसा बेटा" सच साबित हुई: जैसे ही इसहाक गरार पहुंचा, उसने रिबका के साथ अपने संबंध के विषय में झूठ कहा, वैसे ही जैसे कई वर्ष पहले उसके पिता ने सारा के विषय में कहा था। इसहाक ने, इस डर से झूठ बोला की कोई पलिश्ती उसकी हत्या करके उसकी पत्नी को ले लेगा (26:6-11)।

कभी कभी पहली सदी में परमेश्वर के लोगों में छलपूर्ण व्यवहार देखा जाता था। ऐसे कार्य उनकी एकता और गवाही को खतरे में डाल देते थे, और उसी के साथ प्रभु के हृदय में पीड़ा भी उत्पन्न कर देते थे (देखें यूहन्ना 17:19-23)। (1) पतरस ने यीशु का इनकार किया (लूका 22:31-34, 54-62) और अन्ताकिया में पाखंड का प्रदर्शन किया (गला. 2:11-14); (2) हनन्याह और सफीरा ने एक झूठ बोलने का षड्यंत्र रचा (प्रेरितों 5:1-11); और (3) कुछ यहूदी मसीहियों ने चुगली की और पौलुस और उसके अन्यजातीयों के मिशन के प्रति दोष लगाया (प्रेरितों 21:17-32)। कुछ समय के बाद, पौलुस ने लिखा, "इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं" (इफि. 4:25)।

हमें इन शब्दों से चेतावनी लेनी चाहिए और ईमानदारी के लोग होना चाहिए। ज्ञान की बुनियाद सत्य होता है, और यह एक ऐसा सीमेंट है जो लोगों को जोड़ के रखता है। यह स्पष्ट है विवाहों, परिवारों, मित्रताओं, सरकारों, और कलीसियाओं में; ये सभी टिकाऊ सफलता और स्थिरता के लिए सत्य पर निर्भर रहते हैं। जब लोग सच नहीं बोलते, तो समाज टूट कर बिखरने लगते हैं। माता पिताओं को अपने आपसे यह पूछना चाहिए, "हम अपने बच्चों के लिए कैसी विरासत छोड़ रहें हैं?" क्या हम अगली पीढ़ी के लिए धोखाधड़ी, झूठ, स्वार्थ, उद्दंडता, और पाखंड की विरासत छोड़ कर जाएँगे? उन्हें, नम्रता से पाप और विफलताओं को मानना, परमेश्वर के समक्ष उनका कबूला जाना, और सत्यता से परमेश्वर की महिमा करने और उसकी इच्छा पूरी का प्रयास करने का, उदाहरण देखने की आवश्यकता है। जब पाखंड होता है, तो शैतान आनंद मनाता, परमेश्वर के लोग शर्मिंदा होते, और अपने बच्चों के हठ से परमेश्वर का हृदय पीड़ित होता है।

झगड़े से निपटना (26:12-22)

परमेश्वर की आशीषें संसार की इर्ष्या और विरोध का कारण बन सकती हैं। हमारा वचन स्पष्ट रूप से प्रकट करता है की परमेश्वर इसहाक को आशीष देने की अपनी प्रतिज्ञा के प्रति विश्वसनीय था, इसलिए वह अत्यधिक धनवान बन गया। उसके पास प्रचुर मात्र में भेड़ - बकरियों और गाय - बैलों के झुण्ड थे, अपने इर्दगिर्द लोगों का एक विशाल घेरा, और सौ गुणा भरपूर उपज। इस सब के कारण अबीमेलेक के लोगों को इसहाक से इर्ष्या हो गई (26:12-14); उसके द्वारा प्राप्त की गई सांसारिक सफलता से वो अत्यधिक जलन रखते थे। जब पलिश्तियों ने इसहाक के धन और उसकी संपत्ति को देखा, तो पहले उन्होंने,

उसके पिता द्वारा खोदे गए कुओं को भरकर, और उसके पानी की आपूर्ति को बंद करके, उसके धन के भौतिक मूल को कमज़ोर करने का प्रयास किया (26:15)।

जब यह सफल नहीं हुआ, तो अबीमेलेक ने इसहाक और उसके लोगों के गरार नगर को छोड़ कर चले जाने की मांग की। वह उन्हें एक खतरे के रूप में देखता था क्योंकि वे "बहुत सामर्थी" थे (26:16)। इसहाक ने अपने दासों और पशुओं को उस राजधानी से दूर हटा दिया, और उन्होंने "गरार की घाटी [वादी] में अपना तम्बू खड़ा किया" (26:17), जो की नगर से कुछ दूरी पर था। वहां, इसहाक के दासों ने उसके पिता के कुओं को फिर से खोदा। इसके अतिरिक्त, उन्होंने नया कुआं भी खोदा, जो की बहते जल का सोता साबित हुआ (26:18, 19)।

परन्तु, पलिश्तियों ने उनका पीछा किया, प्रत्येक कुँए पर अपना दावा किया, जिसके कारण उन दोनों समूहों के बीच झगड़ा और विवाद उत्पन्न हुआ (26:20, 21)। अंतत, इसहाक अपने लोगों और पशुओं को गरार से और अधिक दूर ले गया, पर अभी भी वे अबीमेलेक के राज्य के किनारे पर थे। वहां, उसके दासों ने सफलता पूर्वक एक और कुआं खोदा, और इस बार पलिश्तियों ने उसपर अधिकार करने का प्रयत्न नहीं किया। बिलकुल, अंत में इसहाक को, कुओं को लेकर इस क्लेश से, राहत मिली, और उसने इसका नाम रखा "रहोबोत," यह विश्वास करते हुए की अंतत प्रभु ने उसे ऐसे स्थान से आशीषित किया जिस भूमि में वह फैल सकता और समृद्ध हो सकता था (26:22)।

इस वर्णन से, हम देख सकते हैं की इसहाक अपने पिता से बहुत भिन्न प्रकार का व्यक्ति था। जब अब्राहम को लोगों से समस्या आई थी, तो उसने उनका सामना किया था और स्थिति को शांत किया था, चाहे वह उसके और लूत के चरवाहों के बीच का झगड़ा हो (13:5-12), पूर्व के चार राजाओं का आक्रमण हो (14:1-24),[19] हाजिरा और इश्माएल की समस्या हो (21:9-14), या फिर पलिश्तियों की समस्या हो (21:22-34)। इसके विपरीत, इसहाक मुकाबला करने से दूर रहा, जहाँ तक संभव हो सकता था। उसने अपने अधिकारों के लिए खड़े रहने के बजाय अन्याय को सहा। उसने "सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखने" (रोमियों 12:18) और उसके कुओं को चुराने के लिए पलिश्तियों से स्वयं बदला ना लेने, का प्रयत्न किया।

कठिन स्थितियों में परमेश्वर की बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती है। हम यह कैसे जान सकते हैं की क्या प्रभु चाहता है हम लोगों का सामना करें या झगड़े से दूर रहें? परमेश्वर दोनों ही तरीकों को आशीषित और इस्तेमाल कर सकता है, और ऐसा उसने पूरे इतिहास के दौरान किया है। मौलिक समस्या यह है की कभी कभी हमारे आसपास के लोगों के साथ मेल मिलाप से रहना असंभव होता है। हमें परमेश्वर के पवित्र और मिलनसार ज्ञान की खोज करनी चाहिए (याकूब 3:17) जैसे हम यीशू के पदचिन्हों पर चलने और उसके सेवक बनने का प्रयास करते है।

इसहाक, वह पुत्र जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम को दी थी, कई प्रकार से अपने पिता के पदचिन्हों पर चला। इनमे सबसे महत्वपूर्ण था यहोवा के साथ उसके व्यक्तिगत संबंध का विकास। परमेश्वर इसहाक को प्रकट हुआ और उन

महान प्रतिज्ञाओं को दोहराया जो उसने अब्राहम से की थी। इन प्रतिज्ञाओं की पूर्ति में इसहाक की भूमिका अभी समाप्त नहीं हुई थी।

विरोध पर विजय (26:23-33)

परमेश्वर के लोगों का दृढ़ विश्वास अक्सर उनकी अगुवाई सांसारिक विरोध पर विजय में करता है। पलिश्तियों के साथ कुओं को लेकर सारे झगड़ों के बाद, इसहाक बेर्शेबा को लौट गया, जहाँ पहले अबिमेलेक और पिकोल उसके पिता अब्राहम के साथ आक्रमण विरोधी संधि करने आए थे, क्योंकि उन्हें आभास हो गया था की परमेश्वर उसके साथ है (21:22-32)। इस स्थिति में, परमेश्वर इसहाक को यह आत्मविश्वास प्रदान करने के लिए प्रकट हुआ कि वह उसके साथ था और उसके वंशजों को आशीष देगा और बहुगुणित करेगा, अपने सेवक अब्राहम के कारण (26:24)। इस दैवी आश्वासन के प्रति अपना आभार व्यक्त करने के लिए, इसहाक ने एक वेदी बनाई और प्रभु की आराधना की।

परमेश्वर के इस प्रकार प्रकट होने के काफी समय बाद, इसहाक के पास अबिमेलेक और उसके दास आए, जो उसके साथ संधि बनाना चाहते थे। पलिश्तियों के आगमन ने इसहाक को अचरज में डाल दिया था क्योंकि वह सोचता था की वे उससे घृणा करते थे और उन्होंने जानबूझ कर उसे अपने राज्य की सीमाओं से बाहर निकाल दिया था (26:27)। वास्तव में, उन्होंने यह निर्णय ले लिया था की इसहाक इतना शक्तिशाली बन रहा था की वह उनके लिए खतरा बनता जा रहा था। उन्होंने कोई भी बुरा काम ना किए जाने का ढोंग करते हुए उत्तर दिया, "हमने तो प्रत्यक्ष देखा है कि यहोवा तेरे साथ रहता है" (26:28)। यह अंतिम कथन संकेत देता है की पलिश्ती यह समझ गए थे की उनके उसके प्रति इतनी रुकावट लाने के बावजूद उसके समृद्ध और शक्तिशाली होने का कारण उसके प्रति परमेश्वर की आशीष ही थी। इसीलिए वे चाहते थे की शपथ खाई जाए और आक्रमण विरोधी आपसी संधि (वाचा) बाँधी जाए, ताकि वे इस विदेशी और उसके लोगों के साथ शांतिपूर्वक रह सकें (26:28, 29)। यह प्रत्यक्ष है की, पलिश्तियों के अपनी यह इच्छा व्यक्त करने से, इसहाक को राहत मिली थी। उसने उनके साथ दावत बांटी, और इसका समापन वाचा संधियों के बदले जाने से हुए। फिर पलिश्तियों ने विदाई ली और गरार को लौट गए (26:30, 31)।

कुछ लोग पलिश्तियों के प्रति इसहाक के व्यवहार के कायरतापूर्ण होने की आलोचना करते हैं, क्योंकि वह अपने अधिकार के लिए खड़ा नहीं रहा। अनगिनत बार, उन्होंने उसके कुएं बंद किए या हाल ही में उसके दासों द्वारा खोदे गए कुओं पर कब्ज़ा किया। स्वाभाविक प्रतिक्रया होनी चाहिए इन शत्रुओं पर पलटवार करना। परन्तु, इसहाक ने प्रतिशोध नहीं लिया; इसके विपरीत, उसने दूसरा गाल आगे कर दिया, जैसा की बाद में यीशु द्वारा मत्ती 5:39 में सिखाया गया। बुराई का बदला बुराई से ना देकर, वास्तव में, भलाई से बुराई को जीत लिया (रोमियों 12:17-21)। बुद्धिमान पुरुष की वाणी थी की "लड़ाई करने का समय और मेल करने का भी समय है" (सभो. 3:8)। इसहाक ने साबित

किया की यह समय लड़ाई का बिलकुल भी नहीं था; उसके शांतिपूर्ण कार्यों के परिणाम स्वरूप उस संधि द्वारा यह निश्चित हुआ की, उसके लोगों और पशुओं को कुओं और चरागाहों का अधिकार मिला, और पलिश्तियों के हस्तक्षेप से मुक्ति भी। प्रभु ने उन्हें आशीष दी ताकि वे शांतिपूर्ण तरीके से कनान देश में अपना अस्तित्व बनाए रख सकें। क्योंकि इसहाक ने मेल मिलाप चाहा, उसका चालचलन "प्रभु को भाया," जिसने "उसके शत्रुओं का भी उससे मेल कराया" (नीति. 16:7)। इस प्रकार से, इसहाक की उसके विरोधियों के लिए प्रतिक्रिया, यीशु और पौलुस की शिक्षाओं की अग्रगामी थी।

समाप्ति नोट्स

[1]समानान्तरों की सूची के लिए, देखें गॉर्डन जे. वेन्हैम, *जेनिसिस 16-50*, वर्ड बाइबल कमेन्टरी, वॉल. 2 (डैलस: वर्ड बुक्स, 1994), 187. [2]भजन 34 का उपरिलेख गत के फिलिस्ती राजा को "अबिमेलेक" कहकर संबोधित करता है (प्रत्यक्षतः एक राजवंशीय उपाधि), जबकि 1 शमूएल 21:10-15 उसे "आकीश" (एक व्यक्तिगत नाम) बुलाती है। [3]जब मूसा ने व्यवस्था के बारे में लिखा (जो अब्राहम के कई सौ सालों के बाद अस्तित्व में आया था), उसने इन आज्ञाओं का वर्णन करने के लिए इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया था (लैव्य. 26:14, 15, 46; व्यव. 11:1)। [4]जे. बारटन पेन, "צָחַק," *TWOT* में, 2:763. [5]जी. हेर्बट लिविंसटन, "אָשַׁם," *TWOT* में, 1:78-79. [6]लियोनार्ड जे. कोप्पस, "נָחַל," *TWOT* में, 2:570. [7]बड़े पैमाने में इस घटना का बेहतरीन उदाहरण वादी फेईरन सीनै पेनिन्सुला में है। जो कई मील फैला मरू उद्यान देता है जिसमे कूएं पाए जाते है, कई सौ खजूर के वृक्ष और अन्य तरह की साग सब्ज़ियाँ। [8]जे. बारटन पेन, "שָׁטָנָה," *TWOT* में, 2:874. [9]पूर्वोक्त, 2:874-75. [10]"बड़ा अजगर" हमें अदन की वाटिका में मनुष्य के पाप में गिरने की प्रक्रिया में शैतान की भूमिका का स्मरण कराता है (3:1, 2, 4, 13, 14, 15)।

[11]केनेथ ए. मैथ्यूज़, *जेनेसिस 11:27-50:26*, द न्यू अमेरिकन कमेंट्री, वोल. 1B (नाशविल्ल: ब्रोडमैन & होलमैंन पब्लिशर्स, 2005), 411. [12]अधिकारियों का पद उनके वंशजों को जो उसी नाम से जाने जाते थे, देने का प्रमाण मौजूद है। यहाँ पर हमें इसी विषय पर डेरेक किंडर की टिपण्णी मिलती है: "लड़को का नाम दादा के नाम पर रखना ('papponymy, 'पप्पोनिमी) कई कालों में ऐसा करने की प्रथा थी। इससे काफी मिलते जुलते उदाहरण में मिस्र के राज घराने और प्रान्तों के अधिकारीयों के परिवारों में यह प्रथा चार पीढ़ियों तक दिखाई देती है, जिसके मद्दे नज़र अम्मेनमीज़ I (Ammenemes I) ने खनुमहोतेप I (Khnumhotep I) को नियुक्त किया और उसके पोते अम्मेनमीज़ II ने खनुमहोतेप II की नियुक्ति की। अपने बीच अदला बदली से, सेसोसत्रिस प्रथम और द्वितीय ने नखत प्रथम और द्वितीय की नियुक्ति की और कुछ समझौते फिर से (दोहराए गए थे *जेनेसिस: एन इंट्रोडक्शन एंड कमेंट्री*, द टिंडल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज़ [डाउनर्स ग्रोव, बीमार.: इन्तेर्वर्सिटी, प्रेस, 1967], 154, n. 1)। [13]विक्टर पी. हैमिलटन, *द बुक आफ़ जेनेसिस: अध्याय 18-50*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिक,: डब्लू.एम बी एर्दमंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1995), 207-8. [14]विक्टर पी. हैमिलटन, "עָבַט," *TWOT* में, 2:899. [15]इस संबंध में, एसाव अपने पिता इसहाक के सामान था, जो चालीस वर्ष का था जब उसने रिबका से विवाह किया (25:20)। [16]यह हित्ती लोग कनानियों के ही उप समूह प्रतीत होते है (10:15; 36:2; टिपण्णी देखें 23:3)। [17]वाल्टर बौएर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन आफ़ द न्यू टेस्टामेंट एंड अर्ली क्रिस्चियन लिट्रेचर*, तीसरा संस्करण, रिवाइज्ड एंड एडिटेड, फ्रेडरिक विलियम डंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी आफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 173. [18]तकनीकी रूप से कहा जाए तो, उन स्थानों में अब्राहम का छल इसहाक के जन्म से पहले घटा था (21:1-3)। फिर

भी, ऐसा लगता है की अब्राहम का कपटता से संघर्ष जारी रहा था, जब भी उसपर खतरा मंडराता। यदि मामला यह था, तो इसहाक ने झूठ बोलना अपने पिता के नकारात्मक उदाहरण से सिखा था। [19]अब्राहम हाथ पर हाथ धरे बैठा नहीं रह सकता था जब उन चार मीसुपुतामिया के राजाओं ने बलपूर्वक लूत, उसके परिवार, और सदोम को लोगों का अपहरण कर लिया था, और उन्हें ले जाकर दासत्व के जीवन में डाल दिया था। यह उन पूर्वी आक्रमणकारियों के प्रति अब्राहम के व्यक्तिगत प्रतिशोध लेने का प्रश्न नहीं था, परन्तु यह मामला उसके अपने जीवन को खतरे में डाल कर दूसरों के जीवनों को, मृत्यु से बदतर परिणाम से, बचाने का था।